45 सूरए अल जासियह

आइए सूरा जासियह की पहली पाँच आयतों का न्याय दर्शन के तत्वों के आधार पर तार्किक और दार्शनिक समीक्षा करें।
चूंकि यह प्रारंभिक आयतें हैं, इसलिए प्रमेय, प्रमाण, Hetu (कारण), Upamana (तुलना), Vyapti (व्याप्ति) आदि के आधार पर विश्लेषण करेंगे।

आयत 1:

आयत:
"हा मीम" (यह अलिफ़ लाम मीम जैसे कुछ संक्षिप्त अक्षर हैं)

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya - ज्ञान का वस्तु)

विश्लेषण:
प्रतिज्ञा: कुरआन के पहले अध्याय की यह संक्षिप्त अक्षर (मुज़म्मिल शब्द) स्वयं एक दिव्य रहस्य हैं।

हेतु: यह अक्षर बिना किसी स्पष्ट अर्थ के प्रस्तुत किए गए हैं, जिनका कोई स्पष्ट तर्क या व्यावहारिक ज्ञान प्रदान नहीं किया गया।

उदाहरण: भारतीय दर्शन में शब्दों और पदों का अर्थ स्पष्ट और तर्कसंगत होता है, जैसे भगवद गीता में हर शब्द का अर्थ स्पष्ट है।

उपनय: बिना स्पष्टता के रहस्यमय शब्दों को ज्ञान का स्रोत मानना न्याय दर्शन के प्रमेय की धारणा के विरुद्ध है क्योंकि ज्ञान वह होता है जो स्पष्ट और प्रमाणित हो।

निगमन: इसलिए, इस आयत का अर्थ और उद्देश्य अस्पष्ट है, जो न्याय दर्शन के प्रमेय के अनुसार ज्ञान का वस्तु नहीं बन सकती।

आयत 2:

आयतः
"यह किताब खुदा की तरफ से नाज़िल हुई है जो ग़ालिब और दाना है।"

चुना गया न्याय तत्वः प्रमाण (Pramana)

विश्लेषणः
प्रतिज्ञाः कुरआन स्वयं को ईश्वर का अवतरण और दाना (सर्वज्ञ) बताता है।

हेतुः यह दावा बिना किसी तर्कसंगत प्रमाण, अनुभव, या बाह्य साक्ष्य के किया गया है।

उदाहरणः न्याय दर्शन में कोई भी ज्ञान तभी मान्य होता है जब वह प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष प्रमाण), अनुमान (तार्किक प्रमाण), उपमान (तुलना), अथवा शब्द (विश्वसनीय स्रोत) के द्वारा समर्थित हो।

उपनयः कुरआनी दावे के समर्थन में कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।

निगमनः अतः यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण के सिद्धांतों के विरुद्ध है और इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 3:

आयतः
"बेशक आसमान और ज़मीन में ईमान वालों के लिए (कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्वः व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषणः
प्रतिज्ञाः आसमान और जमीन में संकेत हैं जो केवल ईमान वालों द्वारा समझे जा सकते हैं।

हेतुः यह एक अपूर्ण सामान्यीकरण है जो यह मानता है कि केवल एक विशिष्ट समूह ही प्रकृति के संकेतों को समझ सकता है।

उदाहरणः सांख्य दर्शन में प्रकृति की सूक्ष्म समझ सभी बुद्धिमान मनुष्यों के लिए उपलब्ध है, न कि किसी एक धार्मिक समूह तक सीमित।

उपनयः इस आयत का तर्क सार्वभौमिक नहीं है क्योंकि प्राकृतिक तथ्य सभी के लिए समान हैं, न कि केवल किसी विशेष समूह के लिए।

निगमनः यह कथन न्याय दर्शन के व्याप्ति के सिद्धांत के खिलाफ है क्योंकि यह असंगत और असार्वभौमिक है।

आयत 4:

आयतः
"और तुम्हारी पैदाइश में और जिन जानवरों को वह ज़मीन पर फैलाता रहता है उनमें भी यकीन करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्वः उपमान (Upamana)

विश्लेषणः
प्रतिज्ञाः मानव और पशु दोनों में ईश्वर के संकेत पाए जाते हैं।

हेतुः यह तुलना (उपमान) सही है लेकिन इसे केवल "यकीन करने वालों" तक सीमित करना उचित नहीं।

उदाहरणः वैशेषिक दर्शन में सभी जीवों और पदार्थों के गुण समान रूप से पर्यवेक्षणीय और समझने योग्य होते हैं।

उपनयः प्राकृतिक नियम और जीवन के चक्र को समझना हर बुद्धिमान व्यक्ति का अधिकार है, न कि केवल यकीन करने वालों का।

निगमनः इसलिए यह उपमान अपूर्ण और सीमित है जो न्याय दर्शन के निष्पक्ष ज्ञान सिद्धांत से असंगत है।

आयत 5:

आयतः
"और रात दिन के आने जाने में और खुदा ने आसमान से जो रिज़क (पानी) नाज़िल फरमाया फिर उससे ज़मीन को जिंदा किया, उनमें अक्लमंद लोगों के लिए निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्वः Hetu (कारण/तर्क)

विश्लेषणः
प्रतिज्ञाः प्राकृतिक घटनाएं (रात-दिन, बारिश) ईश्वर की निशानी हैं।

हेतु: यह कारण पर्याप्त नहीं है क्योंकि ये प्राकृतिक प्रक्रियाएं प्राकृतिक नियमों द्वारा संचालित हैं, जिन्हें विज्ञान समझाता है।

उदाहरण: पातंजलि योग दर्शन में, प्रकृति के नियम और कर्म से घटनाओं का कारण होता है, न कि केवल ईश्वरीय इच्छा।

उपनय: प्राकृतिक घटनाओं को केवल ईश्वर की इच्छा बताना तर्कहीन है, क्योंकि यह कारण-प्रभाव संबंध की उपेक्षा करता है।

निगमन: इसलिए, यह आयत न्याय दर्शन के Hetu के सिद्धांत के विरुद्ध है क्योंकि इसका कारण अधूरा और अनुभवात्मक आधारहीन है।

सारणी: सूरा जासियह (आयत 1-5) का न्याय दर्शन के अनुसार तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
1	**प्रमेय**	**अस्पष्ट अक्षरों को ज्ञान मानना न्याय दर्शन के विपरीत है।**
2	**प्रमाण**	**ईश्वर का अवतरण होने का दावा बिना प्रमाण के है।**
3	**व्याप्ति**	**प्राकृतिक संकेत केवल एक समूह के लिए सीमित करना तर्कहीन।**
4	**उपमान**	**ज्ञान को केवल यकीन करने वालों तक सीमित करना अनुचित।**
5	**हेतु**	**प्राकृतिक घटनाओं को केवल ईश्वर की इच्छा मानना तर्कहीन।**

समग्र निष्कर्ष:

सूरा जासियह की प्रारंभिक पाँच आयतों में प्रस्तुत दावे न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों जैसे प्रमेय, प्रमाण, व्याप्ति, उपमान, और हेतु के संदर्भ में तार्किक और दार्शनिक दृष्टि से कमजोर हैं। ये आयतें या तो अस्पष्ट हैं, बिना प्रमाण के दावे करती हैं, या तर्कहीन सीमितताओं को मानती हैं जो सार्वभौमिक मानव अनुभव और

भारतीय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हैं। अतः ये आयतें सभी मानवता के लिए स्वीकार्य और तर्कसंगत नहीं मानी जा सकतीं।

आप अगली आयतें या कोई विशिष्ट आयत भेजें, मैं उसी रूप में विश्लेषण करूँगा।

सूरा जासियह की आयतें 6 से 10 तक न्याय दर्शन के तत्वों के अनुसार विश्लेषण करते हैं। नीचे प्रत्येक आयत के लिए न्याय दर्शन के नियमों के अनुरूप तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत है।

आयत 6:

आयत:
"ये ख़ुदा की आयतें हैं जिनको हम ठीक तुम्हारे सामने पढ़ते हैं तो ख़ुदा और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (कारण/तर्क)

प्रतिज्ञा: आयतें स्वयं को अंतिम सत्य और तर्कपूर्ण ज्ञान घोषित करती हैं।

हेतु: आयत में यह दावा बिना किसी प्रमाण या तर्क के प्रस्तुत किया गया है कि इनके बाद कोई बात नहीं बचती।

उदाहरण: न्याय दर्शन में अंतिम सत्य तक पहुंचने के लिए तार्किक प्रमाण और बहस आवश्यक होती है, न कि बिना प्रमाण के ऐसा दावा।

उपनय: बिना तर्कपूर्ण प्रमाण के किसी भी विचार को अंतिम सत्य कहना न्याय दर्शन के Hetu नियम का उल्लंघन है।

निगमन: अतः यह आयत तर्क और प्रमाण के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 7:

आयत:
"जिस पर ये लोग ईमान लाएंगे हर झूठे गुनाहगार पर अफ़सोस है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (व्याप्ति - अनिवार्य सहसंभवता)

प्रतिज्ञा: ईमान लाने वालों और गुनाहगारों में पूर्ण भेद है, और गुनाहगारों पर अफ़सोस किया जाएगा।

हेतु: यह स्पष्ट नहीं किया गया कि ईमान और गुनाह की परिभाषा क्या है और क्या सभी लोग समान रूप से दो वर्गों में बांटे जा सकते हैं।

उदाहरण: भारतीय दार्शनिक परंपरा में कर्म और नैतिकता जटिल और परस्पर जुड़ी होती है, और लोगों को केवल दो वर्गों में बांटना तार्किक नहीं।

उपनय: अतः यह कट्टर विभाजन न्याय दर्शन के व्याप्ति के नियम के विरुद्ध है जो कि वस्तुओं के निरंतर और स्पष्ट सहसंबंध की मांग करता है।

निगमन: इस आयत का विभाजन अतिशयोक्तिपूर्ण और तर्कहीन है।

आयत 8:

आयत:
"कि ख़ुदा की आयतें उसके सामने पढ़ी जाती हैं और वह सुनता भी है फिर ग़ुरूर से (कुफ़्र पर) अड़ा रहता है, गोया उसने उन आयतों को सुना ही नहीं। तो (ऐ रसूल) तुम उसे दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (प्रमाण) और Hetvabhasa (तर्कभ्रष्टि)

प्रतिज्ञा: व्यक्ति जान-बूझकर आयतों को नकारता है।

हेतु: यह दावा बिना किसी तर्क या बाह्य प्रमाण के है कि किसी ने आयतें सुनी हैं और जान-बूझकर नकार दी हैं।

उदाहरण: न्याय दर्शन में जान-बूझकर नकारने के लिए तर्कसंगत प्रमाण की आवश्यकता होती है।

उपनय: आयत के अनुसार यह आरोप लगाना तर्कहीन है क्योंकि यह Hetvabhasa (तर्कभ्रष्टि) की श्रेणी में आता है।

निगमन: इसलिए, यह आयत तर्कहीन और बिना प्रमाण के आरोप लगाती है।

आयत 9:

आयत:
"और जब हमारी आयतों में से किसी आयत पर वाक़िफ़ हो जाता है तो उसकी हँसी उड़ाता है, ऐसे ही लोगों के वास्ते ज़लील करने वाला अज़ाब है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (कारण) और Prameya (प्रमेय)

प्रतिज्ञा: हँसी उड़ाना अज्ञानता का प्रमाण है।

हेतु: यह कहा गया है कि हँसी उड़ाना गलत है और इसका दंड होगा, लेकिन इसके कारणों और प्रमाणों का स्पष्ट उल्लेख नहीं।

उदाहरण: भारतीय दर्शन में ज्ञान की प्राप्ति और आलोचना दोनों का तर्कपूर्ण होना आवश्यक है, न कि केवल अनादर।

उपनय: इसलिए, यह आयत आलोचना की प्रकृति को समझने में अपूर्ण है।

निगमन: यह आयत न तो तर्कपूर्ण और न ही नैतिक रूप से पूर्ण है।

आयत 10:

आयत:
"जहन्नुम तो उनके पीछे ही है और जो कुछ वह आमाल करते रहे न तो वही उनके कुछ काम आएँगे और न जिनको उन्होंने खुदा को छोड़कर सरपरस्त बनाए थे और उनके लिए बड़ा (सख़्त) अज़ाब है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (व्याप्ति) और Hetu (कारण)

प्रतिज्ञा: जो लोग किसी अन्य देवताओं की पूजा करते हैं, उन्हें सख्त अज़ाब मिलेगा।

हेतु: यह निर्णय बिना किसी तर्क या अनुभव के दिया गया है।

उदाहरण: न्याय दर्शन में दंड या पुरस्कार का निर्धारण कर्म और कारणों के आधार पर होता है, न कि विश्वास के आधार पर।

उपनय: यह आयत धर्मनिरपेक्ष या सार्वभौमिक नैतिकता के सिद्धांतों के विरुद्ध है।

निगमनः अतः यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति और हेतुतत्व के विरुद्ध तर्कहीन है।

सारणीः सूरा जासियह (आयत 6-10) का न्याय दर्शन के अनुसार तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
6	Hetu	**बिना प्रमाण के अंतिम सत्य का दावा तर्कहीन है।**
7	Vyapti	**कट्टर दो वर्गीकरण तार्किक नहीं और व्याप्ति के विरुद्ध।**
8	Pramana, Hetvabhasa	**बिना प्रमाण के आरोप लगाना तर्कभ्रष्टि है।**
9	Hetu, Prameya	**आलोचना की प्रकृति का उचित विवरण नहीं।**
10	Vyapti, Hetu	**धार्मिक दंड का निर्णय बिना तर्क के है।**

समग्र निष्कर्षः

आयत 6 से 10 तक की ये आयतें न्याय दर्शन के मूल तत्वों जैसे Hetu, Pramana, Vyapti के अनुरूप तार्किक और प्रमाणिक रूप से कमजोर हैं। ये आयतें बिना तर्क और प्रमाण के कट्टर निर्णय लेती हैं और दोषी ठहराने में अतिशयोक्ति करती हैं। न्याय दर्शन की दृष्टि से ये सार्वभौमिक और तार्किक आधार पर स्वीकार्य नहीं हैं।

यदि आप आगे की आयतें भेजें तो मैं उसी प्रकार की आलोचना प्रस्तुत कर सकता हूँ।

सूरा जासियह की आयतें 11 से 15 तक न्याय दर्शन के तत्वों के अनुसार विश्लेषण प्रस्तुत करता हूँ। प्रत्येक आयत को न्याय के ५ भागों (प्रतीज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन) के अनुसार विवेचित किया गया है।

आयत 11:

आयतः
"ये (कुरआन) है और जिन लोगों ने अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार किया उनके लिए सख़्त किस्म का दर्दनाक अज़ाब होगा।"

प्रतिज्ञा: जो लोग ईश्वर की आयतों से इनकार करते हैं, उन्हें सख्त दंड मिलेगा।

हेतु: आयत में यह दावा है कि इनकार करने वाले पर ईश्वर का कठोर दंड निश्चित है।

उदाहरण: न्याय दर्शन में दंड तभी दिया जाता है जब कर्म और परिणाम में स्पष्ट और अपरिवर्तनीय व्याप्ति (व्याप्ति) हो।

उपनय: यहाँ दंड का कारण केवल "इनकार" बताया गया है, जबकि कर्म के अन्य पहलू और परिस्थिति अवलोकन का अभाव है।

निगमन: अतः यह दंड का दावा न्याय दर्शन के व्याप्ति तत्व के विरुद्ध है क्योंकि बिना स्पष्ट कर्म और परिणाम के असंगत दंड देना तर्कहीन है।

आयत 12:

आयत:
"ख़ुदा ही तो है जिसने दरिया को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियाँ चलें और ताकि उसके फज़ल (व करम) से (मआश की) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो।"

प्रतिज्ञा: दरिया को नियंत्रित करने वाला केवल ईश्वर है, और इसका उद्देश्य इंसानों को कष्ट और कृपा देना है।

हेतु: यह दावा बिना वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण के प्रस्तुत है कि दरिया पूरी तरह ईश्वर के आदेश से चलता है।

उदाहरण: प्राकृतिक प्रक्रियाओं का विज्ञानिक विवरण उपलब्ध है, जैसे समुद्री धाराएं, जलवायु और मौसम विज्ञान।

उपनय: केवल ईश्वरीय आदेश से सभी प्राकृतिक घटनाओं को जोड़ना न्याय दर्शन के प्रमाण (प्रमाण) तत्व के विरुद्ध है जो तर्क और अनुभव पर आधारित है।

निगमन: इस आयत में तर्कहीन सार्वभौमिककरण और प्रमाणहीनता स्पष्ट है।

आयत 13:

आयतः
”और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सबको अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया है जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिए इसमें (क़ुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं।”

प्रतिज्ञाः ब्रह्मांड के सभी तत्व मानव सेवा में नियोजित हैं।

हेतुः यह पूर्णतया एक पक्षीय दावा है जिसमें जीवों, ग्रहों और तत्त्वों को केवल मानव सेवा हेतु नियोजित माना गया है।

उदाहरणः भारतीय दर्शन जैसे सांख्य और वैशेषिक में प्रकृति को स्वयंसिद्ध तत्त्व माना गया है जिसका उद्देश्य मानव सेवा तक सीमित नहीं।

उपनयः अतः यह दृष्टिकोण मानव केंद्रितता का अतिवाद है जो न्याय दर्शन के सार्वभौमिकता और व्यापक दृष्टि से असंगत है।

निगमनः यह आयत तर्क और दर्शन के अनुरूप नहीं, क्योंकि इसे तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक दृष्टि से पुनर्विचार की आवश्यकता है।

आयत 14:

आयतः
”(ऐ रसूल) मोमिनों से कह दो कि जो लोग ख़ुदा के दिनों की (जो जज़ा के लिए मुक़र्रर हैं) तवक़्क़ो नहीं रखते उनसे दरगुज़र करें ताकि वह लोगों के आमाल का बदला दे।”

प्रतिज्ञाः जो लोग अपनी अपेक्षा नहीं रखते, उनसे क्षमा करो ताकि ईश्वर न्याय करे।

हेतुः यह नैतिक व्यवहार की बात है पर इसके पीछे तर्क स्पष्ट नहीं।

उदाहरणः भारतीय दर्शन में क्षमा एक गुण है, किन्तु यह कर्मफल की तर्कसंगत व्याख्या पर आधारित होता है।

उपनयः यहाँ क्षमा का सुझाव है, पर बिना यह स्पष्ट किए कि कब और क्यों क्षमा करनी चाहिए, यह अर्धतार्किक है।

निगमनः यह आयत मानवीय व्यवहार के लिए प्रोत्साहन देती है, पर न्याय दर्शन के स्पष्ट कारण और परिणाम के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।

आयत 15:

आयतः
"जो शख़्स नेक काम करता है तो ख़ास अपने लिए और बुरा काम करेगा तो उसका बवाल उसी पर होगा, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाए जाओगे।"

प्रतिज्ञाः कर्म का फल केवल व्यक्ति को ही भुगतना पड़ता है।

हेतुः यह कथन कर्मफल सिद्धांत का समर्थन करता है।

उदाहरणः भारतीय दर्शन (यथा न्याय, सांख्य, योग) में कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा समान है, परंतु यह अवधारणा कर्म के विस्तार और सामाजिक प्रभाव को भी मानती है।

उपनयः यहाँ केवल व्यक्ति पर ही कर्म का प्रभाव माना गया है, जबकि सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव को नजरअंदाज किया गया है।

निगमनः इस आयत में कर्मफल का सिद्धांत आंशिक रूप से सही है पर सामाजिक दृष्टिकोण से अपर्याप्त है।

सारणीः सूरा जासियह (आयत 11-15) का न्याय दर्शन के अनुसार तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
11	Vyapti, Hetu	बिना व्यापक व्याप्ति के केवल इनकार पर सख्त दंड देना तर्कहीन।
12	Pramana	प्राकृतिक घटनाओं को केवल ईश्वर के आदेश से जोड़ना वैज्ञानिक नहीं।
13	Prameya,	मानव केंद्रित प्रकृति का दावा सार्वभौमिक नहीं और अतिवादी है।

	Vyapti	
14	Hetu	**क्षमा के पीछे तर्क स्पष्ट नहीं, आंशिक नैतिक प्रोत्साहन।**
15	Hetu, Prameya	**कर्मफल का दावा आंशिक रूप से सही पर सामाजिक प्रभावों को नकारता है।**

समग्र निष्कर्ष:

आयत 11 से 15 की आयतें न्याय दर्शन के तत्वों के अनुसार कई तार्किक कमजोरियाँ रखती हैं। इनमें प्रमाणहीन दावे, अतिवाद, और असंगत सार्वभौमिकता देखी जाती है। विशेषकर प्राकृतिक घटनाओं के ईश्वरीय आदेश से होने का दावा बिना वैज्ञानिक प्रमाण के किया गया है, जो न्याय दर्शन के Pramana के नियम के विरुद्ध है। कर्मफल का सिद्धांत सीमित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है और सामाजिक दायित्वों को अनदेखा करता है।

इस प्रकार, ये आयतें न्याय और तर्क के आधार पर पूर्णतः स्वीकार्य नहीं ठहरतीं।

यदि आप और आयतें भेजें तो मैं उसी प्रकार विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता हूँ।

सूरा जासियह की आयतें 16 से 20 तक न्याय दर्शन के तत्वों के आधार पर विश्लेषण प्रस्तुत करता हूँ। प्रत्येक आयत को न्याय के ५ भागों के अनुसार विवेचित किया गया है।

आयत 16:

आयतः
"और हमने बनी इसराईल को किताब (तौरेत) और हुकूमत और नबूवत अता की और उन्हें उम्दा उम्दा चीज़ें खाने को दीं और उनको सारे जहाँन पर फ़ज़ीलत दी।"

प्रतिज्ञा: बनी इसराईल को विशेष ग्रंथ, हुकूमत, नबूवत और श्रेष्ठ आहार दिया गया तथा वे सारे जहाँ में श्रेष्ठ हैं।

हेतु: यह दावा बिना पर्याप्त तर्क या ऐतिहासिक प्रमाण के कि एक समूह को पूरी मानव जाति पर श्रेष्ठता दी गई।

उदाहरण: भारतीय न्याय दर्शन में समानता और धर्मशास्त्र में सभी मनुष्यों को समान माना गया है; उदाहरणतः भगवद्गीता में सभी जीवों में आत्मा समान मानी गई है।

उपनय: इसलिए किसी एक समुदाय को सार्वभौमिक श्रेष्ठता देना न्याय दर्शन के समता सिद्धांत और वैश्विक दृष्टिकोण से असंगत है।

निगमन: यह दावा अतिवादी और असामाजिक है, जो अन्य समुदायों के साथ भेदभाव करता है।

आयत 17:

आयत:
"और उनको दीन की खुली हुई दलीलें इनायत की तो उन लोगों ने इल्म आ चुकने के बाद बस आपस की ज़िद में एक दूसरे से एख़्तेलाफ़ किया कि ये लोग जिन बातों से एख़्तेलाफ़ कर रहें हैं क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार उनमें फैसला कर देगा।"

प्रतिज्ञा: ज्ञानी लोग भी अपने मतभेदों को समाप्त नहीं कर सके और अंतिम निर्णय ईश्वर पर छोड़ दिया।

हेतु: यह दावा कि विवादों के कारण सही मार्ग का ज्ञान असंभव हो गया।

उदाहरण: न्याय दर्शन में विवाद से ज्ञान प्राप्ति का मार्ग होता है, न कि इसे छोड़ देना।

उपनय: विवादों को सुलझाने के लिए तार्किक विमर्श और प्रमाणीकरण आवश्यक है, ईश्वर पर निर्भर रहना केवल तर्क का परित्याग है।

निगमन: इस आयत में विवाद को असफलता माना गया है जो न्याय दर्शन के विमर्श और प्रमाणीकरण प्रक्रिया के सिद्धांत के विरुद्ध है।

आयत 18:

आयत:
"फिर (ऐ रसूल) हमने तुमको दीन के खुले रास्ते पर क़ायम किया है तो इसी (रास्ते) पर चले जाओ और नादानों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो।"

प्रतिज्ञा: रसूल को निर्दिष्ट मार्ग पर चलने और नादानों के वासनाओं का अनुसरण न करने का आदेश।

हेतु: यह तर्क कि एक ही मार्ग सत्य है और अन्य मार्ग असत्य हैं।

उदाहरण: न्याय दर्शन में सत्य की खोज निरंतर होती है और विभिन्न मतों का सम्मान भी किया जाता है।

उपनय: किसी एक मार्ग को अंतिम सत्य मानना तर्कसंगत बहुलता (pluralism) के सिद्धांत के विरुद्ध है।

निगमन: यह आयत धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देती है, जो न्याय दर्शन की बहुमत-स्वीकृति और तर्कवाद के अनुरूप नहीं है।

आयत 19:

आयत:
"ये लोग ख़ुदा के सामने तुम्हारे कुछ भी काम न आएँगे और ज़ालिम लोग एक दूसरे के मददगार हैं और ख़ुदा तो परहेज़गारों का मददगार है।"

प्रतिज्ञा: ज़ालिमों का परस्पर समर्थन है और केवल परहेज़गारों को ईश्वर का सहारा प्राप्त होता है।

हेतु: यह कथन मनुष्यों के बीच सामाजिक सहायता की जटिलताओं को नहीं दर्शाता।

उदाहरण: सामाजिक विज्ञान और न्याय दर्शन में सामाजिक सहायता जटिल और बहुआयामी होती है, न कि केवल ज़ालिमों या नेक लोगों तक सीमित।

उपनय: अतः इस कथन में मानव समाज के यथार्थ को सरल और गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

निगमन: यह आयत सामाजिक व्यवहार के यथार्थ से असंगत और अतिसाधारण निष्कर्ष देती है।

आयत 20:

आयत:
"ये (क़ुरआन) लोगों (की) हिदायत के लिए दलीलो का मजमूआ है और बातें करने वाले लोगों के लिए (अज़हरतापा) हिदायत व रहमत है।"

प्रतिज्ञा: क़ुरआन दलीलों का संग्रह है जो दयालु लोगों के लिए मार्गदर्शक है।

हेतु: दलीलों का संग्रह होना आवश्यक है परंतु क्या ये दलीलें तर्कसंगत और सार्वभौमिक हैं, यह स्पष्ट नहीं।

उदाहरण: न्याय दर्शन के अनुसार, दलीलों की सत्यता उनके प्रमाण और व्याप्ति से सिद्ध होती है।

उपनय: कुरआन की दलीलों को बिना सम्यक परीक्षण के सार्वभौमिक हिदायत मानना न्याय दर्शन की प्रमाणीकरण प्रक्रिया के विरुद्ध है।

निगमन: इस आयत में दलीलों के प्रमाणिकता की गारंटी नहीं दी गई है, अतः इसे आलोचना से मुक्त नहीं माना जा सकता।

सारणी: सूरा जासियह (आयत 16-20) का न्याय दर्शन के अनुसार तार्किक मूल्यांकन

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
16	Pratijna, Prameya	एक समुदाय को सार्वभौमिक श्रेष्ठता देना असामाजिक और अतिवादी।
17	Hetu, Vyapti	विवाद को असफलता और ईश्वर पर निर्भरता को तर्कहीन मानना।
18	Hetu, Pramana	एकल मार्ग को अंतिम सत्य मानना धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देता है।
19	Prameya, Hetu	सामाजिक व्यवहार को सरल और अतिसाधारण रूप में प्रस्तुत करना।
20	Pramana	दलीलों की प्रमाणीकरण प्रक्रिया अस्पष्ट और अपूर्ण।

समग्र निष्कर्ष:

आयत 16 से 20 की आयतों में न्याय दर्शन के अनुसार कई तार्किक और दार्शनिक कमियाँ हैं। इनमें समूह विशेष को सर्वश्रेष्ठ ठहराना, विवाद को ईश्वर पर छोड़ देना, एक मार्ग को अंतिम सत्य मान लेना और सामाजिक व्यवहार की जटिलताओं को सरल दिखाना शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, दलीलों की

प्रमाणीकरण प्रक्रिया स्पष्ट नहीं है, जो न्याय के Pramana तत्व के विरुद्ध है। अतः ये आयतें तर्क और दर्शन के मानकों पर खरे नहीं उतरतीं।

यदि आप अगली आयतें भेजना चाहें, तो मैं उसी प्रकार विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता हूँ।

आइए इन पाँच आयतों (21 से 25) का न्याय दर्शन के तत्वों के आधार पर विश्लेषण करें और दिखाएँ कि ये मानवता के लिए तार्किक और सार्वभौमिक रूप से क्यों अनुचित और गलत संदेश प्रस्तुत करती हैं।

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"जो लोग बुरा काम किया करते हैं क्या वह ये समझते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम भी करते रहे और उन सब का जीना मरना एक सा होगा ये लोग (क्या) बुरे हुक्म लगाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्वः
Hetu (हेतु) - कारण

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जो बुरे कर्म करते हैं, उनका परिणाम अच्छा कर्म करने वालों के बराबर होगा।
- **हेतु (Reason):**
  यह कथन कारणहीन और असंगत है क्योंकि कर्म का फल उसके स्वभाव के अनुसार अलग-अलग होना चाहिए। बुरे कर्मों के बराबर अच्छे कर्मों का फल देने का तर्क न्याय दर्शन के आधार पर सही नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  गीता (अध्याय 3, श्लोक 9) में कहा गया है कि कर्म के अनुसार ही फल मिलता है, जैसे कि किसान बीज बोता है और उसी के अनुसार फसल उगती है।
- **उपनय (Application):**
  यदि बुरे कर्मों का फल भी अच्छे कर्मों के समान दिया जाए तो कर्म का सिद्धांत ही व्यर्थ हो जाता

है। यह मानवता को कर्म के न्यायसंगत फल की समझ से दूर ले जाता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत कारण (हेतु) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है और मानवता के लिए न्यायसंगत नैतिकता को अस्वीकार्य बनाती है।

आयत 22

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ने सारे आसमान व ज़मीन को हिकमत व मसलेहत से पैदा किया और ताकि हर शख़्स को उसके किये का बदला दिया जाए और उन पर (किसी तरह का) ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
Prameya (प्रमेय) - ज्ञात वस्तु

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा:**
  सृष्टि पूरी हिकमत से बनाई गई है ताकि कर्म का फल मिल सके और ज़ुल्म न हो।

- **हेतु:**
  यह दावा बिना किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण के किया गया है। सृष्टि में व्याप्त अनेकों दुःख, अन्याय और असमानताएं इसे नकारती हैं।

- **उदाहरण:**
  वैज्ञानिक दर्शन और न्याय दर्शन दोनों कहते हैं कि प्रकृति में कई बार अनियमितताएं, दुर्घटनाएं और अन्याय पाए जाते हैं।

- **उपनय:**
  अगर सृष्टि पूरी हिकमत से बनाई गई होती तो प्राकृतिक आपदाएं, बिमारियाँ और अन्याय नहीं होते, परन्तु ये सब आज भी विद्यमान हैं।

- **निगमन:**
  इस आयत का प्रमेय वास्तविक अनुभव और वैज्ञानिक ज्ञान के विरुद्ध है।

आयत 23

आयत का अनुवाद:
"भला तुमने उस शख़्स को भी देखा है जिसने अपनी नफसियानी ख़्वाहिशों को माबूद बना रखा है और (उसकी हालत) समझ बूझ कर ख़ुदा ने उसे गुमराही में छोड़ दिया है और उसके कान और दिल पर अलामत मुक़र्रर कर दी है (कि ये ईमान न लाएगा) और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है फिर ख़ुदा के बाद उसकी हिदायत कौन कर सकता है तो क्या तुम लोग (इतना भी) ग़ौर नहीं करते।"

चुना गया न्याय तत्व:
Pramana (प्रमाण) - ज्ञान का स्रोत

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा:**
  ईश्वर ने कुछ लोगों को समझदारी से गुमराही में छोड़ दिया है और उनकी चेतना पर पर्दा डाल दिया है।

- **हेतु:**
  यह कथन तर्क और अनुभव दोनों के विरुद्ध है क्योंकि चेतना और बुद्धि व्यक्ति के कर्म, शिक्षा और प्रयास से विकसित होती है।

- **उदाहरण:**
  गीता (अध्याय 6, श्लोक 5) में कहा गया है कि व्यक्ति अपने आप को उन्नत कर सकता है, और उसे अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।

- **उपनय:**
  अगर ईश्वर चेतना पर पर्दा डाल देता है तो व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा और कर्म सिद्धांत ध्वस्त हो जाता है।

- **निगमन:**
  यह आयत प्रमाणीकरण के आधार पर अवैज्ञानिक और अमानवीय है, जो व्यक्ति के स्वतंत्र कर्म सिद्धांत का खंडन करती है।

आयत 24

आयत का अनुवाद:
"और वह लोग कहते हैं कि हमारी ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की है (यहीं) मरते हैं और (यहीं) जीते हैं और हमको बस ज़माना ही (जिलाता) मारता है और उनको इसकी कुछ ख़बर तो है नहीं ये लोग तो बस अटकल की बातें करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
Upamana (उपमान) - तुलना

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा:**
  दुनिया ही जीवन का अंत है और मृत्यु के बाद कुछ नहीं।

- **हेतु:**
  यह दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टि से तर्कहीन है क्योंकि मानव मन में कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा हजारों वर्षों से प्रचलित है।

- **उदाहरण:**
  सांख्य दर्शन और वेदांत दोनों पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत को स्वीकारते हैं, जो इस जीवन के बाद भी अस्तित्व को मानता है।

- **उपनय:**
  यह कथन आध्यात्मिक ज्ञान के खिलाफ है जो मानता है कि आत्मा अमर है और जीवन मृत्यु के चक्र में रहती है।

- **निगमन:**
  यह आयत सार्वभौमिक आध्यात्मिक सत्य का खंडन करती है और केवल संदेह और अटकलों पर

आधारित है।

आयत 25

आयत का अनुवाद:
"और जब उनके सामने हमारी खुली खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनकी कट हुज्जती बस यही होती है कि वह कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादाओं को (जिला कर) ले तो आओ।"

चुना गया न्याय तत्व:
Vyapti (व्याप्ति) - पर्याय सम्बन्ध

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा:**
  आयतों के सामने भी लोग बाप-दादाओं को जीवित करने की चुनौती देते हैं।
- **हेतु:**
  यह तर्क व्याप्ति की कमी दर्शाता है क्योंकि प्रमाण के लिए यह आवश्यक है कि तर्क और उदाहरण सार्वभौमिक रूप से लागू हों।
- **उदाहरण:**
  न्याय दर्शन में व्याप्ति का अर्थ है तर्क का सार्वभौमिक और अविचल संबंध होना, जो यहाँ नहीं पाया जाता।
- **उपनय:**
  यह चुनौती प्रमाण की अवहेलना करती है क्योंकि यह व्यक्तिगत अनुभवों और तर्क के बजाय केवल विवाद और चुनौती प्रस्तुत करती है।
- **निगमन:**
  यह आयत तार्किक प्रमाण की कमी दर्शाती है और विवाद को ही तर्क का स्थान देती है, जो वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टि से अस्वीकार्य है।

सारणी: न्याय दर्शन के आधार पर आयतों की आलोचना

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
21	Hetu (कारण)	बुरे और अच्छे कर्मों का समान फल देना असंगत है।
22	Prameya (प्रमेय)	सृष्टि के हिकमत से बनने का दावा असत्य और अप्रमाणित।
23	Pramana (प्रमाण)	चेतना पर ईश्वर के पर्दे का विचार अवैज्ञानिक।
24	Upamana (उपमान)	मृत्यु के बाद जीवन न मानना आध्यात्मिक ज्ञान के विरुद्ध।
25	Vyapti (व्याप्ति)	प्रमाण और तर्क की कमी, केवल विवाद पर आधारित।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार न्याय दर्शन के प्रमुख तत्वों – कारण, प्रमाण, प्रमेय, उपमान और व्याप्ति – के अनुसार तार्किक और दार्शनिक दृष्टि से कमजोर हैं। ये आयतें मानवता के लिए सार्वभौमिक सत्य और न्याय की समझ को चुनौती देती हैं और अनुभवजन्य, तार्किक एवं दार्शनिक प्रमाणों के अभाव में अस्वीकार्य प्रतीत होती हैं। गीता और अन्य भारतीय दर्शन शास्त्रों के सिद्धांतों के साथ उनकी तुलना करने पर यह और भी स्पष्ट होता है कि ये संदेश मानव कल्याण और सार्वभौमिक नैतिकता के अनुरूप नहीं हैं।

यदि आप चाहें तो मैं अगली आयतों का भी इसी ढंग से विश्लेषण कर सकता हूँ।

आइए इस पांच आयतों (26 से 30) का न्याय दर्शन के तत्वों के आधार पर विश्लेषण करें और दिखाएँ कि ये आयतें मानवता के लिए तार्किक और दार्शनिक दृष्टि से क्यों अनुचित और त्रुटिपूर्ण हैं।

आयत 26

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ख़ुदा ही तुमको ज़िन्दा (पैदा) करता है और वही तुमको मारता है फिर वही तुमको क़यामत के दिन जिस (के होने) में किसी तरह का शक नहीं जमा करेगा मगर अक्सर लोग नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व:
Pramana (प्रमाण) - ज्ञान का स्रोत

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  सिर्फ़ ख़ुदा ही जीवन और मृत्यु का कारण है, और वही कयामत के दिन निर्णय करेगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन प्रत्यक्ष अनुभव और तर्क के विरुद्ध है। जीवन और मृत्यु के प्राकृतिक कारण, जैविक प्रक्रियाएं हैं, न कि केवल एक परस्पर अतिशयोक्तिपूर्ण सत्ता।

- **उदाहरण (Example):**
  वैज्ञानिक और दर्शन दोनों सिद्ध करते हैं कि जीवन की उत्पत्ति जैविक क्रियाओं से होती है और मृत्यु भी प्राकृतिक प्रक्रियाओं का परिणाम है।

- **उपनय (Application):**
  अगर केवल एक अलौकिक शक्ति को जीवन-मृत्यु का जिम्मेदार माना जाए, तो यह मानव प्रयास, चिकित्सा विज्ञान, और जीवविज्ञान के सिद्धांतों को निरस्त करता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय और प्रमाण के आधार पर अवैज्ञानिक और तार्किक रूप से असंतोषजनक है।

आयत 27

आयत का अनुवाद:
"और सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत ख़ास ख़ुदा की है और जिस रोज़ क़यामत बरपा होगी उस रोज़ एहले बातिल बड़े घाटे में रहेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
Pratijna (प्रतिज्ञा) - प्रस्ताव

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा:**
  सृष्टि की सम्पूर्ण सत्ता ख़ुदा के पास है, और क़यामत के दिन बैरक़ार लोग नुकसान में होंगे।
- **हेतु (Reason):**
  यह प्रस्ताव अनुभव या तर्क से सिद्ध नहीं किया गया है। सत्ता का आधिपत्य और कयामत का सिद्धांत मिथकीय और दार्शनिक आधारहीन हैं।
- **उदाहरण (Example):**
  गीता और वेदांत में परम सत्ता का भिन्न अर्थ है – न कि यह कि कोई दिन निश्चित रूप से न्याय करेगा।
- **उपनय (Application):**
  यदि सत्ता का निरूपण तार्किक और वास्तविक प्रमाणों के बिना हो तो यह अंधविश्वास और भय पैदा करता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत कारण और प्रमाण के अभाव में तर्कहीन है और भय आधारित नियंत्रण का माध्यम प्रतीत होती है।

आयत 28

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) तुम हर उम्मत को देखोगे कि (फैसले की मुन्तज़िर अदब से) घूटनों के बल बैठी होगी और हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ़ बुलाइ जाएगी जो कुछ तुम लोग करते थे आज तुमको उसका बदला दिया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
Vyapti (व्याप्ति) - अविचल सम्बंध

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा:**
  सभी जातियाँ अपने कर्मों के हिसाब से न्याय के लिए उपस्थित होंगी।

- **हेतु (Reason):**
  ऐसे सार्वभौमिक न्याय की कोई empirical पुष्टि नहीं है। मानव इतिहास में समान न्याय व्यवस्था भी अनुपस्थित है।

- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में न्याय के लिए प्रमाण और प्रक्रिया आवश्यक है, जो विश्वव्यापी रूप में उपलब्ध नहीं है।

- **उपनय (Application):**
  यह कथन अतार्किक है क्योंकि कोई सार्वभौमिक न्याय व्यवस्था या घटना अभी तक अनुभव या प्रमाणित नहीं हुई है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय के व्याप्ति और प्रमाण की धारणा के विरुद्ध है।

आयत 29

आयत का अनुवाद:
"ये हमारी किताब (जिसमें आमाल लिखे हैं) तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक ठीक बोल रही है जो कुछ भी तुम करते थे हम लिखवाते जाते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
Hetu (हेतु) - कारण

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा:**
  अल्लाह की किताब कर्मों को सही ढंग से दर्ज करती है।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा तर्क और प्रमाण से निर्वस्त्र है क्योंकि कर्मों को दर्ज करने या ट्रैक करने की कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत व्याख्या नहीं दी गई।

- **उदाहरण (Example):**
  प्राचीन और आधुनिक दर्शन कर्म के फल को अनुभव और सिद्धांत के आधार पर समझाते हैं, न कि किसी अलौकिक "किताब" द्वारा।

- **उपनय (Application):**
  यदि कर्म केवल अलौकिक दर्ज के आधार पर फल देते तो मानव कर्म सिद्धांत, श्रम, और नैतिकता की समझ असंगत होती।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्क के विरुद्ध है और कर्म सिद्धांत का अपभ्रंश करती है।

आयत 30

आयत का अनुवादः
"ग़रज़ जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किये तो उनको अपना परवरदिगार अपनी रहमत (से बेहिश्त) में दाख़िल करेगा यही तो सरीही कामयाबी है।"

चुना गया न्याय तत्वः
Prameya (प्रमेय) - ज्ञात वस्तु

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञाः**
  ईमान और अच्छे कर्म करने वालों को स्वर्ग मिलेगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा अनुभवजन्य नहीं है क्योंकि स्वर्ग या परलोक की कोई सार्वभौमिक मान्यता या प्रमाण नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में मोक्ष, पुनर्जन्म और कर्म के माध्यम से मुक्ति का सिद्धांत है, जो केवल "ईमान" और "अच्छे कामों" से अलग है।

- **उपनय (Application):**
  यह दृष्टिकोण धर्मविशेष के सन्दर्भ में है और सार्वभौमिक सत्य नहीं माना जा सकता।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय की दृष्टि से अप्रमाणित और धर्मनिरपेक्ष सत्य के विरोध में है।

सारणी: न्याय दर्शन के आधार पर आयतों की आलोचना

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
26	Pramana (प्रमाण)	जीवन-मृत्यु के कारण पर अतार्किक अलौकिकवाद।
27	Pratijna (प्रतिज्ञा)	सत्ता और कयामत के दावे अनुभव-तर्क विरोधी।
28	Vyapti (व्याप्ति)	सार्वभौमिक न्याय की व्याप्ति का अभाव।
29	Hetu (हेतु)	कर्म रिकॉर्डिंग का अलौकिक दावा तर्कहीन।
30	Prameya (प्रमेय)	स्वर्ग की अवधारणा अनुभव और दर्शन के विरुद्ध।

समग्र निष्कर्ष:

ये आयतें न्याय दर्शन के प्रमुख तत्वों के दृष्टिकोण से तार्किक और दार्शनिक रूप से असंतोषजनक हैं। जीवन, मृत्यु, न्याय और कर्म की व्याख्याएँ अनुभव, तर्क, और दर्शन से मेल नहीं खातीं। इनके अलौकिक और अस्पष्ट दावे मानवता के समष्टिगत, वैज्ञानिक और नैतिक ज्ञान से भटकाव पैदा करते हैं। भारतीय दर्शन के मोक्ष, पुनर्जन्म, कर्म सिद्धांत के सापेक्ष ये विचार अव्यवहारिक और अस्वीकार्य प्रतीत होते हैं।

यदि आप चाहें तो मैं अन्य आयतों का भी इसी प्रकार विश्लेषण कर सकता हूँ।

आपके द्वारा प्रस्तुत आयतों (31 से 35) का न्याय दर्शन के तत्वों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत है, जिसमें प्रत्येक आयत के लिए न्याय के प्रमुख घटक (Pratijna, Hetu, Udaharana, Upanaya, Nigamana) का उपयोग करते हुए तर्कसंगत आलोचना की गई है।

आयत 31

आयत का अनुवाद:
"और जिन्होंने कुफ्र एख़्तेयार किया (उनसे कहा जाएगा) तो क्या तुम्हारे सामने हमारी आयतें नहीं पढ़ी जाती थीं (ज़रूर) तो तुमने तकब्बुर किया और तुम लोग तो गुनेहगार हो गए।"

न्याय तत्व:
Hetu (हेतु) - कारण

विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
  कुफ्र करने वालों ने खुद को ईश्वर की आयतों से ऊपर समझा और इसलिए वे पापी हैं।
- **हेतु:**
  यह कथन व्यक्तिगत अहंकार (तकब्बुर) को मुख्य दोष मानता है, परंतु अहंकार को पापी ठहराना बिना सुस्पष्ट प्रमाण के तर्कहीन है।
- **उदाहरण:**
  हिंदू दर्शन में अहंकार (अहंकार) को मुक्ति के मार्ग में बाधा माना जाता है, परन्तु इसे 'पाप' की संकल्पना से अलग समझा जाता है।
- **उपनय:**
  यदि अहंकार को ही मुख्य दोष माना जाए तो यह नकारात्मकता की एक अत्यंत साधारण व्याख्या होगी, जो मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों को नजरअंदाज करती है।
- **निगमन:**
  यह आयत कारण के स्तर पर अपूर्ण और अतिशयोक्तिपूर्ण है, जो व्यक्तियों की जटिल मानसिकताओं को एकतरफा दोषारोपण करती है।

आयत 32

आयत का अनुवाद:
"और जब (तुम से) कहा जाता था कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है और क़यामत (के आने) में कुछ शुबहा नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या चीज़ है हम तो बस (उसे) एक ख़्याली बात समझते हैं और हम तो (उसका) यक़ीन नहीं रखते।"

न्याय तत्व:
Pramana (प्रमाण) - ज्ञान का स्रोत

विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
  कयामत के अस्तित्व को नकारना या संदेह करना ग़लत है।

- **हेतु:**
  यह आयत अनुभव और तार्किक ज्ञान के प्रतिकूल है क्योंकि कयामत की अवधारणा का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

- **उदाहरण:**
  भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म और मोक्ष की अवधारणा है, परन्तु वे अनुभव और तर्क के साथ एक स्पष्ट दिशा प्रदान करती हैं। कयामत जैसे दिन का प्रमाण अनादि काल से अव्याख्येय और कल्पनात्मक रहा है।

- **उपनय:**
  शंका और प्रश्न करना तर्क के लिए आवश्यक है, इसलिए किसी भी अमूर्त अवधारणा को बिना प्रमाण के स्वीकार करना अंधविश्वास है।

- **निगमन:**
  इस आयत का विरोध तर्कसंगत प्रमाणीकरण के अभाव में किया जा सकता है, अतः यह आयत तर्कहीनता को बढ़ावा देती है।

आयत 33

आयत का अनुवाद:
"और उनके करतूतों की बुराईयाँ उस पर ज़ाहिर हो जाएँगी और जिस (अज़ाब) की ये हँसी उड़ाया करते थे उन्हें (हर तरफ़ से) घेर लेगा।"

न्याय तत्व:
Vyapti (व्याप्ति) - अविचल सम्बंध

विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
  पापी कर्मों का फल भयंकर दंड होगा।
- **हेतु:**
  व्याप्ति सिद्धांत के अनुसार, सभी बुरे कर्मों पर दंड होना आवश्यक है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है।
- **उदाहरण:**
  ऐतिहासिक और वर्तमान दुनिया में ऐसे लोग मौजूद हैं जिन्हें बुरे कर्मों के बावजूद कोई तत्काल दंड नहीं मिलता।
- **उपनय:**
  यदि दंड का सार्वभौमिक सिद्धांत न हो तो यह आयत व्याप्ति की अवधारणा के विरुद्ध है।
- **निगमन:**
  यह आयत वास्तविकता से मेल नहीं खाती, अतः दार्शनिक दृष्टि से खामीपूर्ण है।

आयत 34

आयत का अनुवाद:
"और (उनसे) कहा जाएगा कि जिस तरह तुमने उस दिन के आने को भुला दिया था उसी तरह आज हम तुमको अपनी रहमत से अमदन भुला देंगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं।"

न्याय तत्व:
Pratijna (प्रतिज्ञा) - प्रस्ताव

विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
 जो लोग कयामत को भूल गए, उन्हें दोज़ख़ की सजा दी जाएगी।

- **हेतु:**
 यह आयत एक दंडात्मक प्रस्ताव रखती है, लेकिन दंड का कोई तार्किक प्रमाण या प्रक्रिया नहीं देती।

- **उदाहरण:**
 भारतीय न्याय दर्शन में भी दंड होता है परंतु वह प्रमाण, न्यायिक प्रक्रिया और पुनर्वास के आधार पर होता है।

- **उपनय:**
 यहाँ दंड का प्रस्ताव कठोर और बिना प्रमाण के है, जो न्याय के तात्त्विक सिद्धांतों के विरुद्ध है।

- **निगमन:**
 यह आयत न्याय के तर्क और प्रमाण से असंगत है।

आयत 35

आयत का अनुवाद:
"ये इस सबब से कि तुम लोगों ने ख़ुदा की आयतों को हँसी ठट्ठा बना रखा था और दुनयावी ज़िन्दगी ने तुमको धोखे में डाल दिया था ग़रज़ ये लोग न तो आज दुनिया से निकाले जाएँगे और न उनको इसका मौका दिया जाएगा कि (तौबा करके ख़ुदा को) राज़ी कर ले।"

न्याय तत्व:
Nigamana (निगमन) - निष्कर्ष

विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
 जो लोग ईश्वर के वचनों का अपमान करते हैं, उन्हें दंडित किया जाएगा और तौबा का अवसर नहीं

मिलेगा।

- **हेतु:**
  यह निष्कर्ष अत्यंत कठोर और दया के अभाव में है, जो मानव स्वभाव और सुधार की संभावना को नकारता है।
- **उदाहरण:**
  गीता और अन्य भारतीय ग्रंथों में पुनः सुधार और क्षमा का सिद्धांत है।
- **उपनय:**
  इस आयत का तर्क संशयास्पद है क्योंकि यह दया और न्याय के समन्वय को नजरअंदाज करता है।
- **निगमन:**
  यह आयत न्याय दर्शन और मानवता के आधारभूत नैतिक सिद्धांतों के विपरीत है।

सारणी: न्याय दर्शन के आधार पर आलोचना

आयत संख्या	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
31	Hetu (हेतु)	अहंकार को दोषी ठहराना तर्कहीन और मनोवैज्ञानिक कारणों की उपेक्षा।
32	Pramana (प्रमाण)	कयामत का विश्वास बिना प्रमाण के, तर्कहीन और अंधविश्वासी।
33	Vyapti (व्याप्ति)	दंड का सार्वभौमिक होना असत्य, अनुभव विरोधी।
34	Pratijna (प्रतिज्ञा)	दंड प्रस्ताव बिना न्यायिक प्रक्रिया के, अतार्किक।
35	Nigamana (निगमन)	दया और सुधार की संभावना नकारना, मानवता विरोधी।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क और प्रमाण की कमी स्पष्ट है। यह आयतें मानव स्वभाव, न्याय और दया के तत्वों का उल्लंघन करती हैं। विशेषकर दंड और पाप की अवधारणा अत्यंत कठोर, बिना वैज्ञानिक या दार्शनिक आधार के प्रस्तुत की गई है। भारतीय दर्शन की दया, क्षमा, और पुनः सुधार की अवधारणाओं के सापेक्ष ये विचार नकारात्मक और अव्यावहारिक हैं। इसलिए ये आयतें Nyaya दर्शन के अनुसार तार्किक, दार्शनिक और नैतिक दृष्टि से असंतोषजनक हैं।

यदि आप चाहें तो मैं अन्य आयतों का भी इसी प्रकार से विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता हूँ।

आपके द्वारा प्रस्तुत आयत 36 और 37 का न्याय दर्शन के प्रमुख तत्वों के आधार पर विश्लेषण निम्नलिखित है:

आयत 36

आयत का अनुवाद:
"पस सब तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए सज़ावार है जो सारे आसमान का मालिक और ज़मीन का मालिक (ग़रज़) सारे जहाँन का मालिक है।"

न्याय तत्व:
Pratijna (प्रतिज्ञा) – प्रस्ताव

विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
  सारी सृष्टि का मालिक सिर्फ़ ख़ुदा है।
- **हेतु (कारण):**
  इस आयत में ख़ुदा को संपूर्ण सृष्टि का मालिक बताया गया है, परन्तु इसका तर्क या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।
- **उदाहरण:**
  भारतीय दर्शन में ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) के रूप में सर्वव्यापक सत्ता की अवधारणा है, पर यह सत्ता

निराकार, अनादि और अनंत है, न कि किसी व्यक्तिगत "मालिक" के रूप में।

- **उपनय (अनुप्रयोग):**
  सृष्टि के मालिक होने का तर्क तभी मान्य होता है जब उस सत्ता की उपस्थिति और क्रियाशीलता का स्पष्ट प्रमाण हो, जो इस आयत में नहीं दिया गया।

- **निगमन:**
  इस आयत में मालिक होने का दावा बिना तर्कसंगत प्रमाण के है, इसलिए यह दार्शनिक दृष्टि से अधूरा और अतार्किक है।

आयत 37

आयत का अनुवाद:
"और सारे आसमान व ज़मीन में उसके लिए बड़ाई है और वही (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है।"

न्याय तत्व:
Hetu (हेतु) और Vyapti (व्याप्ति) – कारण और अविचल सम्बंध

विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
  ख़ुदा सब पर विजेता और बुद्धिमान है।

- **हेतु:**
  आयत बताती है कि ख़ुदा की बुद्धि और विजय सार्वभौमिक है।

- **उदाहरण:**
  भारतीय दर्शन में बुद्धि को प्रकृति और पुरुष के सामंजस्य से देखा जाता है, जहां ज्ञान और शक्ति का सामूहिक सिद्धांत है।

- **उपनय:**
  सारी सृष्टि में एकमात्र विजेता और हिकमत वाला होना दार्शनिक दृष्टि से विवादास्पद है क्योंकि ज्ञान और शक्ति के कई रूप हो सकते हैं, जो बहुलवादी दृष्टिकोण को समर्थित करते हैं।

- **निगमनः**
  इस आयत की सार्वभौमिकता पर प्रश्न उठाया जा सकता है क्योंकि यह बहुमुखी ज्ञान और शक्ति के अस्तित्व को सीमित कर देती है।

सारणी: न्याय दर्शन के आधार पर आलोचना

आयत संख्या	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
36	**Pratijna (प्रतिज्ञा)**	**मालिक होने का दावा बिना तर्कसंगत प्रमाण के।**
37	Hetu, Vyapti	**ज्ञान और शक्ति के एकात्मक और सर्वश्रेष्ठ स्वरूप का दावा विवादास्पद।**

समग्र निष्कर्ष:

आयतें एकात्म सत्ता के सिद्धांत को प्रस्तुत करती हैं, लेकिन बिना स्पष्ट तर्क और प्रमाण के। भारतीय दर्शन में सत्ता और ज्ञान को बहुपरिवर्तनशील और व्यापक माना जाता है, जो इस आयत की सैद्धांतिक सीमाओं को दर्शाता है। अतः ये आयतें Nyaya दर्शन के दृष्टिकोण से पूर्णतया तार्किक और दार्शनिक रूप से अनिवार्य नहीं हैं।

यदि आप चाहें तो मैं अन्य आयतों का भी इसी प्रकार से विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता हूँ।